राग मारू

ऊभा ने रहो रे वाला ऊभा ने रहो, हजी आयत छे अति घणी।
रामत रमाडो अमने, उलट जे अमतणी।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! खड़े रहो, अभी और चाह बाकी है। हमको खेल खिलाओ, जिसकी चाह हमारे मन में है।

अनेक रंगे रमाडियां, केटलां लऊं तेना नाम।
सखी सखी प्रते जुजवा, सहुना पूरण कीधां मन काम।। २ ।।

आपने अनेक तरह के खेल खिलाए हैं, जिनके नाम कहां तक लूं? आपने प्रत्येक सखी के साथ खेलकर सबकी मनोकामना पूर्ण की है।

आ भोमनो रंग उजलो, कांई तेज तणो अंबार।
वस्तर भूखण आपना, सूं कहूं सरूप सिणगार।। ३ ।।

इस भूमि का रंग बड़ा उज्ज्वल है। प्रकाश का तो मानो ढेर ही है। आपके वस्त्राभूषण, स्वरूप और शृंगार की शोभा कैसे कहूं?

नेहेकलंक दीसे चांदलो, नहीं कलातणो कोई पार।
उठे अलेखे किरणें, सहु झलकारों झलकार।। ४ ।।

चन्द्रमा निष्कलंक है। इसकी कलाओं का पार नहीं है। उसमें अपार किरणें उठती हैं और चारों ओर रोशनी की झलकार फैली है।

वन वेलडियो छाइयो, रलियामणां फूल कई रंग।
वाय सीतल रंग प्रेमल, कांई अंगडे वाध्यो उमंग।। ५ ।।

वन में वृक्षों पर बेलें छाई हैं, जिनमें कई रंग के सुन्दर फूल हैं। इनकी सुगन्धित ठण्डी हवा और रंग से अंग में उमंग बढ़ रही है।

वली रस वनमां छे घणों, मीठी पंखीडानी वाण।
ए वन मुकाय नहीं, रूडो अवसर ए प्रमाण।। ६ ।।

फिर से वनों में पक्षियों की मीठी आवाज गुंजार कर रही है जिससे रस और बढ़ गया। ऐसे सुन्दर अवसर में यह वन छोड़ा नहीं जाता।

अनेक विलास कीधां वनमां, मली सहुए एकांत।
ए सुखनी वातो सी कहूं, कांई रमियां अनेक भांत।। ७ ।।

वन में हम सबने मिलकर एकान्त में अनेक विलास किए हैं। इसके सुख की बातें कैसे कहूं? हमने अनेक प्रकार की रामतें खेली हैं।

हवे एक मनोरथ एह छे, आपण रमिए एणी रीते।
बाथ लीजे बंने बल करी, जोइए कोंण हारे कोंण जीते।। ८ ।।

हे वालाजी! अब एक इच्छा यह है कि हम दोनों इस प्रकार कोलियां भरकर जोर लगाकर खेलें और देखें कौन हारता और कौन जीतता है?

Nijanand App

झलके झीणी रेतडी, नहीं कांकरडी लगार।
थाय रूडी इहां रामत, आपण रमिए आधार।। ९ ।।

बारीक रेत चमक रही है। जरा भी कंकड़ नहीं हैं। यहां यह खेल अच्छा होगा, इसलिए हे वालाजी! आओ हम खेलें।

सखियो तमे ऊभा रहो, जेवुं होय तेवुं केहेजो।
बंने लऊं अमें बाथडी, तमे साख ते सांची देजो।। १० ।।

दूसरी सखियों से श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि तुम सब खड़े होकर जैसा देखो वैसा कहना। हम दोनों एक दूसरे के गले में बाहें डालते हैं। तुम सच्ची गवाही देना।

दोडी लीधी कंठ बांहोडी, बंने करी हो हो कार।
सखियो मनमां आनंदियो, सुख देखी थयो करार।। ११ ।।

दौड़कर 'हो हो की आवाज' में दोनों ने एक-दूसरे के गले में हाथ डाल दिए। देखने वाली सखियों को यह रामत देखकर सुख मिला। मन को करार आया।

चरण आंटी भुज बंध वाली, कोई न नमे रे अभंग।
बाथो लिए बंने बल करी, रस चढतो जाय रंग।। १२ ।।

वालाजी ने और श्री इन्द्रावतीजी ने पैर से पैर अड़ा लिए हैं। बाजुओं को पकड़ रखा है। दोनों में से कोई झुकता नहीं है। दोनों ने ही ताकत के साथ कोली भर रखी है, जिससे आनन्द बढ़ता जाता है।

वालो बलाका देवाने, नीचा नमाव्या चरण।
हो हो वालाजी हारिया, हंसी हंसी पडे सहु धरण।। १३ ।।

वालाजी ने चकमा देने के लिए थोड़ा पैर नीचे झुकाया, तो सभी सखियां 'हो-हो' करके चिल्लाने लगीं। वालाजी हार गए—वालाजी हार गए। हंस-हंसकर सब धरती पर लोट-पोट होती हैं।

सखियो कहे अमे जीतियो, सुख उपनूं आसाधार।
ताली दई दई हरखियो, लडथडे पडे सहु नार।। १४ ।।

सखियां कहती हैं कि हम जीत गईं और उन्हें अपार आनन्द हुआ। ताली बजा-बजाकर बहुत खुश हो रही हैं तथा लड़खड़ा कर धरती पर गिर रही हैं।

अणची कां करो रे सखियो, हूं जाणूं छूं तमारू जोर।
जीत्या विना एवडी उलट, कां करो एवडो सोर।। १५ ।।

वालाजी कहते हैं कि हे सखियो! मैं तुम्हारी ताकत जानता हूं। तुम बेइन्साफी (अन्याय) क्यों करती हो? बिना जीते ही इतनी उमंग से इतना शोर क्यों मचा रही हो?

हारया हारया अमने कां कहो, आवो लीजे बीजी बाथ।
जे हारसे ते हमणां जोसूं, तमे सांची केहेजो सहु साथ।। १६ ।।

'हार गए, हार गए' मुझे क्यों कहती हो? आओ दुबारा गले में बाहें डालकर यही रामत करें। जो हारेगा उसे अभी देख लेंगे। तुम सब मिलकर सच्ची गवाही देना।

Nijanand App

आवो वली बाथो बीजी लीजिए, एक पूठीने अनेक।
हमणां हरावुं तमने, वली हंसावुं वसेक।। १७ ।।

आओ दूसरी बार, एक नहीं अनेक बार यही रामत करें और अभी तुमको हराकर सभी को हंसाएं।

कहे इंद्रावती हूं बलवंती, सुणजो सखियो वात।
नेहेचे तमने ऊंचूं जोवरावुं, वली रामत करूं अख्यात।। १८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! मेरी बात सुनो, मैं बलवान हूं और बिना शक इसी रामत का खेल खेलकर तुमको मैं जीतकर दिखलाती हूं। अब ऐसी रामत खेलूंगी, जिसे आज तक कोई जानता ही नहीं है।

॥ प्रकरण ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ ८०२ ॥

छंदनी चाल

एणे समे रामत गमे, वालो विलसी लिए सोसी।
अधुरी मधुरी, अमृत घूटें, छोले छूटे लिए लूटे।। १ ।।
लथ बथ, हथ सथ, अंग संग, रंग बंग चंग, चोली चूथी,
भाजी भूसी, हांसी सांसी, जाणी पाणी, नैणी माणी,
वदू वाणी, रहोजी होजी, माजी काजी, भाखूं जाखूं,
रंगे राखूं, समारूं सिणगार जी।। २ ।।
वली वसेखे, राखूं रेखे, लेऊं लेखूं, जोऊं जोखूं,
प्रेमे पेखूं घसी मसी, आवी रसी, हंसी खसी वसी,
भीसी रीसी खीसी, जरडी मरडी, करडी खरडी।। ३ ।।
खंडी खांडी, छांडी मांडी, मेली भेली, भूमी चूंमी, गाली लाली,
लोपी चापी, लाजी भाजी, दाझी काढी, आंजी हांजी,
जीती जोपे, रूडी रीते, उठी इंद्रावती आ वार जी।। ४ ।।

॥ प्रकरण ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ ८०६ ॥

राग धन्या छंद

छेल छंछेरीने लीधी बाथ जुगते, रामत कीधी अति रंग जी।
स्याम सुंदरी बंने सरखी जोड, जाणिए एकै अंग जी।। १ ।।
वली रामत मांडी एक जुगते, जाणिए सघली अभंग जी।
रामत करतां आलिंघण लेतां, लटके दिए चुमन जी।। २ ।।
रमतां भीडे कठण कुचसों, छबकेसूं रंग लेत जी।
अमृत पिए वालोजी रमतां, अधुर इंद्रावती देत जी।। ३ ।।
अधुर लई मुख मांहें मारे वाले, आयत कीधी अपार जी।
भूखण उठया उठया अंगों अंगे, रहो रहो समरथ सार आधार जी।। ४ ।।

Nijanand App